ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

संकाय– मानविकी

विषय– हिन्दी

पीएच.डी शोधकार्य का प्रस्तावित प्रारुप

शोध–शीर्षक

सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Dr. Krishna Kumar Paswan
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhaul
13.04.2024

शोध निर्देशक

डॉ0 कृष्ण कुमार पासवान

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

आर.सी.एस. कॉलेज, मंझौल

बेगूसराय

कविता कुमारी
13.04.24

शोधार्थी

कविता कुमारी

पैट– 2021–2022

पैट क्रमांक– **E2209064**

पता

ग्राम– बिन्दटोली

पोस्ट+थाना– साहेबपुर कमाल

जिला– बेगूसराय

पिन कोड– 851217

सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण है जिसमें रचनाकार अपनी भाषा में जीवन के विविध पहलुओं का कलात्मक प्रतिबिम्ब गढ़ता है। साहित्यकार समाज में घटित हो रहे क्रिया कलापों को अपनी कल्पनाशीलता से इस प्रकार पुनर्सृजित करता है कि वह पाठक को बिलकुल नूतन जीवनानुभव प्रतीत होता है। कोई भी रचनाकार भाषा के माध्यम से अपने कथानक, पात्र, संवाद आदि को रचता है। सामाजिक व्यवहार की सारी संभावनाओं को भाषा के माध्यम से साकार करता है। भाषा के माध्यम से सामाजिक संरचना और मानवीय कार्य व्यापार को अपनी रचानों में दर्ज करता है। कुल मिलकर कहें तो साहित्यकार समाज में उपस्थित समस्त सांस्कृतिक संभावनाओं को रचनात्मक सन्दर्भों के साथ प्रस्तुत करता है। अतः किसी भी साहित्यिक कृति का समाजशास्त्रीय अध्ययन उसकी वैध्यता को प्रमाणित करता है। साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन में रचना के प्रत्येक स्तर में निहित सामाजिकता की व्याख्या होती है। साहित्य के समाजशास्त्र में साहित्य के अस्तित्व और साहित्यकार की स्थिति पर भी विचार किया जाता है। चूँकि समाज के विकास के साथ साथ साहित्य और साहित्यकार की स्थिति भी बदलती रहती है इसलिए साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन इसके मूल्यांकन के लिए एक अनिवार्य मानक हो सकता है।

विज्ञान एवं तकनिकी विकास के इस दौर में लोगों के पास मनोरंजन एवं ज्ञान के इतने दृश्य-श्रव्य श्रोत मौजूद है कि साहित्य के प्रति लोगों की रूचि बदलती जा रही है। ऐसे समय में आलोचना की सबसे बड़ी चुनौती साहित्य के प्रति पाठक में दिलचस्पी पैदा करना और उसे बनाए रखना। यह आलोचना का सांस्कृतिक एवं सामाजिक दायित्व भी है कि वह साहित्य कि वैसी निर्मिती स्थापित करे जो उस पाठ का कोई बनावटी रहस्वादी विश्लेषण का आतंक पैदा न करे। साहित्य का समाजशास्त्रीय विश्लेषण इसी सरलीकरण और सहज सम्प्रेषण का एक माध्यम है। साहित्य का समाजशास्त्रीय विश्लेषण सामान्य पाठक को साहित्य से आसानी से जोड़ने में एक सफल उपकरण का काम करता है। ऐसे में साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन सामाजिक सार्थकता की रक्षा का एक माध्यम भी बन सकता है। समय समय पर अकादमिक दुनिया में

13.04.2024

Dr Krishna ...
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhaul

कविता कुमारी
13.04.24

यह बहस होती है कि पाठक ही किसी लेखन को साहित्य बनता है। अर्थात साहित्य जब तक सामान्य पाठक की चेतना का हिस्सा नहीं बनता तब तक वह मात्र एक लेखन है। साहित्य का समाजशास्त्रीय दृष्टि सम्पूर्ण साहित्यिक-प्रक्रिया या एक कृति के अनेक स्तरीय प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंधों के विश्लेषण पर जोर देता है। साहित्य के समाजशास्त्र की दो प्रमुख धाराएँ हैं : मीमांसापरक और अनुभववादी। एक में साहित्य के सामाजिक महत्व और अर्थ का विश्लेषण होता होता है और दूसरी धारा में साहित्य के सामाजिक अस्तित्व का। पहली धारा साहित्य में समाज की अभिव्यक्ति की खोज करता है और दूसरी समाज में साहित्य की वास्तविक स्थिति की पहचान। पहली पद्धति को समाजशास्त्रीय आलोचना कहा जाता है और दूसरे को साहित्य का समाजशास्त्र।

साहित्य के समाजशास्त्र का प्रवर्तक फ़्रांसिसी विचारक तेन को माना जाता है। परन्तु इनसे पूर्व से ही यह अध्ययन पद्धति साहित्यिक विश्लेषण में प्रयुक्त हो रहे थे। फ़्रांस में साहित्य के समाजशास्त्रीय चिंतन की परम्परा व्यवस्थित रूप में मादाम स्तेल की 1800 ई. में प्रकाशित पुस्तक ￼सामाजिक संस्थाओं से साहित्य के संबंध पर विचार￼ में दिखाई पड़ती है। इस पुस्तक पहली बार साहित्य के भौतिक आधार, सामाजिक अस्तित्व और सामाजिक संस्थाओं से उसकी क्रिया-प्रतिक्रीय पर व्यवस्थित ढंग से विचार किया गया। साहित्य पर धर्म, नैतिकता और कानून का प्रभाव तथा उन सब पर साहित्य के प्रभाव की पड़ताल किया गया है। इस कारण से कुछ लोग मादाम स्तेल को साहित्य के समाजशास्त्र का प्रवर्तक मानते हैं। इन मान्यताओं को आगे चल कर तेन ने विस्तार दिया। मादाम स्तेल ने साहित्य के स्वरुप और शैली पर प्राकृतिक परिवेश और प्रजाति के प्रभाव का विवेचन किया है। इस विचार को तेन ने अपनाते हुए साहित्य के परिवर्तन और विकास पर सामाजिक विकास के प्रभाव का विश्लेषण किया है। अपने इन महत्वपूर्ण विचारों को तेन ने 'अंग्रेजी साहित्य का इतिहास', 'कला का दर्शन', 'इटली की यात्रा' आदि पुस्तकों में अभिव्यक्त किया है। अध्ययन की इस परंपरा में लियो लावेंथल का नाम महत्वपूर्ण है। इन्होंने सांस्कृतिक परिप्रेक्ष में साहित्य की सामाजिकता का विश्लेषण किया। इनकी दृष्टि में साहित्य ऐसी अवधारण है जो सामाजिक स्वरूप को अपने में अन्तर्निहित करती है। ये मानते हैं कि साहित्य वैयक्तिक अनुभव का ऐतिहासिक भण्डार है। उसमें प्रेम और प्रकृति की नितांत निजी अनुभूतियाँ होती हैं, लेकिन वे भी सामाजिक सन्दर्भों से प्रभावित रहती हैं। इनका मानना है कि साहित्य में पाठक को जो जीवन अनुभव मिलते हैं वे वैयक्तिक के साथ साथ

13.04.2024

कविता कुमारी
13.04.24

सामाजिक ऐतिहासिक भी होते हैं। साहित्य के समाजशास्त्रीय चिंतन की इस कड़ी में लूसिएं गोल्डमान का नाम महत्त्वपूर्ण है। ये जार्ज लुकाच से बहुत प्रभावित थे। गोल्डमान के अनुसार प्रत्येक कृति किसी लेखक की रचना होती है और वह लेखक के विचारों तथा अनुभूतियों को व्यक्त करती है। लेकिन वे विचार और भाव समाज तथा वर्ग के दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार और और चिंतन से प्रभावित होते हैं। यह चिंतन साहित्य के समाजशास्त्रीय विश्लेषण का मूल आधार है। वैयक्तिक चिंतन का समाजीकरण की इस प्रक्रिया को रेमंड विलियम्स सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष में व्याख्यायित विश्लेषित करते है।

प्रस्तुत शोध का विषय सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन है। इस शोध में सच्चिदानंद चतुर्वेदी के उपन्यासों एवं कहानियों का अध्ययन विश्लेषण विश्लेषण समाजशास्त्रीय पद्धति से किया जायेगा। सचिदानंद चतुर्वेदी के कुल चार उपन्यास, 'अधबुनी रस्सी : एक परिकथा', 'मझधार', 'पिघले चहरे' और 'न हन्यते' तथा एक कहानी संग्रह 'रोशनी की लकीरें' हैं। इसके अतिरिक्त लेखक ने कुछ आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक सन्दर्भ की पुस्तकें लिखी हैं जैसे 'वैराग्य : एक दार्शनिक एवं तुलनात्मक अध्ययन', 'अरुणांचल का आदिकालीन इतिहास : एक झलक', 'अज्ञेय के निबंध : एक आलोचनात्मक अधययन' भारतीय काव्यशास्त्र आदि। 'वैराग्य : एक दार्शनिक एवं तुलनात्मक अध्ययन' पुस्तक भारतीय वेदन्त दर्शन में वैराग्य के महत्व पर लिखी गई है। 'अरुणांचल का आदिकालीन इतिहास : एक झलक' में अरुणांचल प्रदेश के आदिकालीन लोक कथाओं के ऐतिहासिक संदर्भो को आधार बना कर लिखा गया है। अन्य पुस्तकें अज्ञेय के निबध : एक आलोचनात्मक अधययन' एवं 'भारतीय काव्यशास्त्र' दोनों पुस्तक साहित्यिक सिद्धांतों की पुनर्व्याख्या पर आधारित है। इन आलोचनात्मक आलोचनात्मक पुस्तक का अपना ऐतिहासिक-संस्कृति महत्व है जिसमें लेखक के इन विषयों से सम्बंधित निजी दृष्टि और आलोचनात्मक विचार अभिव्यक्त हुए हैं। इनके उपन्यासों एवं कहानियों कहानियों में मनुष्य की वैयक्तिकता एवं सामाजिक जीवन मूल्य की अभिव्यक्ति हई है। इन कृतियों में लेखक का समय, समाज और ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रतिध्वनित होती दिखाई पड़ती है। है। सच्चिदानंद चतुर्वेदी मूलतः कन्नौज के रहने वाले हैं किन्तु इनके जीवन का अधिकाश समय पूर्वोत्तर भारत, दक्षिण भारत और यूरोप में गुजरा। वर्तमान में हैदराबाद में रहते हैं। इनके उपन्यासों और कहानियों में अभिव्यक्त कनौजी संस्कृति का अपने समय और समाज से तादात्म इनकी अपनी मिट्टी से लगाव का प्रतीक है, जिसे रचनाकार ने प्रवास के समय अपने लेखन में

13.04.2024

Dr Krishna Kumar Prasad
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhaul

कविता कुमारी
13.04.24

संजोने का प्रयास किया है। कथा साहित्य के उदय की पृष्ठभूमि में सामाजिक सन्दर्भ महत्वपूर्ण रहा है। सच्चिदानंद चतुर्वेदी ने अपने उपन्यासों और कहानियों में इसे अत्यंत सजीवता के साथ संप्रेषित करने का प्रयास किया है।

प्रस्तावित शोध विषय की आवश्यकता

महान फ़्रांसिसी विचारक तेन ने लिखा है कि कोई साहित्यिक कृति न तो एक व्यक्ति की कल्पना की क्रीड़ा है न किसी उत्तेजित मन की भटकी हुई अकेली तरंग। वह समकालीन रीति-रिवाजों का पुनर्लेखन है और एक विशेष प्रकार के मानव की अभिव्यक्ति भी। हम महान रचनाओं रचनाओं से यह जान सकते हैं कि किस समय और समाज में मनुष्य कैसे सोचता और अनुभव करता है। साहित्य का समाजशास्त्र इसी अनुभवजन्य विवेचन का प्रतिफल है। इस अनुभवजन्य अभिव्यक्ति की बुनियाद पर ही किसी रचना की स्वीकार्यता निर्भर करती है। बृहत्तर पाठक वर्ग की स्वीकृति ही किसी साहित्य की सफलता का प्रतीक है। पाठक की स्वीकृति इस बात पर निर्भर करता है कि कोई रचनाकार ने अपने समय और समाज को कितनी संजीदगी से अपने लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इस दृष्टि से देखें तो सच्चिदानंद चतुर्वेदी का साहित्य अपने समकालीन परिप्रेक्ष को चित्रित करने में सफल प्रतीत होता है। इनके कथासाहित्य की पृष्ठभूमि कन्नौज का ग्रामांचल और कानपूर शहर है। जिन उपन्यासों या कहानियों में भूगोल स्पष्ट नहीं है वह भारत का कोई भी गाँव या क्षेत्र हो सकता है। कथाकार द्वारा अपने साहित्यिक साहित्यिक कृतियों में चित्रित समाज के स्तरीकरण को समझने के लिए इन ग्रामांचलों की पृष्ठभूमि के साथ साथ यहाँ के समाज को जानना जरुरी है। इस दृष्टि से देखें तो इन कृतियों को को समझने के लिए समाजशास्त्र एक अनिवार्य उपकरण हो सकता है। मैनेजर पाण्डेय के अनुसार अनुसार साहित्य के समाजशास्त्र का मुख्य उद्देश्य समाज से साहित्य के संबंधों की खोज और उसकी व्याख्या करना है। उपरी तौर पर समाज से साहित्य का संबंध जितना सहज और सरल दिखाई पड़ता है उतना वह होता नहीं है। इस जटिलता की व्याख्या के लिए साहित्य का समाजशास्त्रीय विश्लेषण अनिवार्य है। क्योंकि यह दृष्टि साहित्य की साहित्यिकता की रक्षा करते हुए उसमें निहित सामाजिकता की खोज करती है। भारतीय सन्दर्भ में धूर्जटि प्रसाद मुखर्जी ने इस दिशा में प्रथम प्रयास किया है। इसके बाद डी.पी. मुखर्जी ने बांगला के साहित्यिक कृतियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया। इस कड़ी में पूरनचंद जोशी का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने

13-04-2024
Dr. Krishna Kumar Paswan
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhaul

कविता कुमारी
12.04.24

गोदान का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया। इसके अतिरिक्त डी डी कौसम्बी, रोमिला थापर एवं अन्य इतिहासकारों के साहित्यिक चिंतन ने इस अध्ययन को वैचारिक पृष्ठभूमि प्रदान की। हिंदी में यह सत्तर के दशक में चर्चा में आया और इसके बाद इस विषय पर अनेक शोध हुए जिसका श्रेय मैनेजर पाण्डेय और उनके जैसे विद्वानों को जाता है जिन्होंने पश्चिम के समाजशास्त्र के विद्वानों द्वारा निर्मित सामाजिक सिद्धांत को भारतीय संदर्भों में व्याख्यायित किया। इसमें इपॉलित इपॉलित अडोल्फ़ तेन, लियो लावेंथल, लूसिएं गोल्डमान, रेमंड विलियम्स आदि के साहित्य के समाजशास्त्रीय सिद्धांत के आधार पर साहित्य का अध्ययन विश्लेषण किया गया।

चूँकि साहित्य एक सार्वभौमिक संकल्पना है जिसमें मानवीय संवेदनाओं एवं संबंधों की अभिव्यक्ति की जाती है। इसलिए इन सिद्धांतों के आधार पर सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कथा साहित्य की व्याख्या की जाय तो इसमें चित्रित सामाजिक जीवन की जटिलताओं के विविध पहलुओं को बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। सच्चिदानंद चतुर्वेदी के समग्र कथा साहित्य पर अब तक कोई काम नहीं हुआ है इसलिए इस शोध कार्य की आवश्यकता है क्योंकि रचनाकार को समझने में यह सहायक होगा। 'न हन्यते' को छोड़ कर बाकि के सभी लेखन में रचनाकार ने कनौजी ग्रामांचल और वहां के सामाजिक परिवेश को अपने लेखन का विषय बनाया है।

<u>प्रस्तावित शोध विषय का महत्व</u>

प्रस्तावित शोध का विषय सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन है। सचिदानंद चतुर्वेदी हिंदी के ख्यातिलब्ध कथाकार प्रेमचंद, फनीश्वरनाथ रेणु, रही मासूम रजा, शिवप्रसाद सिंह आदि की परंपरा के रचनाकार हैं जिन्होंने भारतीय ग्राम्य जीवन को अपने उपन्यासों और कहानियों में प्राणवान किया है। चाहे रिश्तों की मर्यादा हो या सामाजिक संबंधों का अंतर्विरोध सभी को अनुभव की प्रमाणिकता से रचाने का प्रयास किया है। इनके प्रमुख चार उपन्यास हैं- *'अधबुनी रस्सी : एक परिकथा', 'मझधार', 'पिघले चहरे', 'न हन्यते'* और एक कहानी संग्रह 'रोशनी की लकीरें' है जिसमें कुल नौ कहानियाँ संगृहीत हैं। इसके अतिरिक्त हिंदी के के प्रमुख पत्रिकाओं वसुधा, अनभै साँच, दैनिक वार्ता, नई धरा, भाषा भारती आदि में कई कहानियाँ प्रकाशित हैं। *'अधबुनी रस्सी : एक परिकथा'* भारतीय ग्रामीण जीवन की गाथा है। उपन्यासकार ने इसमें भारत के ग्रामीण इलाके में रह रहे लोगों के सामाजिक राजनीतिक जीवन सन्दर्भ को अत्यंत सजीवता और मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। जाति व्यवस्था भारतीय

13.04.2024

कविता कुमारी
13.04.24

Dr Krishna Kumar Paswan
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhaul

समाज व्यवस्था का मूल आधार है जिसकी धूर वर्ण व्यवस्था पर टिकी है। सचिदानंद चतुर्वेदी ने इस उपन्यास में बड़े बेवाकी से इसका चित्रण किया है। पंचायती राज की संकल्पना ने समाज के वंचित वर्गों की राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व करने का अवसर दिया। परन्तु सुदूर ग्रामीण इलाके में आज भी यह संकल्पना अपने वास्तविक स्वरुप में लागू नहीं हो पाया है। लेखक ने आरक्षित श्रेणी के ग्राम प्रधान के चयन में गाँव के प्रभुत्वशाली लोगों की भूमिका का चित्रण करते हुए बताने का प्रयास किया है कि आज चुनाव के नाम पर कैसे लोकतांत्रिक मूल्यों का अपहरण हो रहा है। जमीनी विवाद भारत के सभी गाँव की गंभीर समस्या है जिसे लेखक ने गंभीरता के साथ इस उपन्यास में उठाया है। *मझधार'* में मनुष्य की जिजीवषा और अधिक पाने की लालसा को उपन्यासकार ने व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। आज प्रत्येक मनुष्य को अपनी संपत्ति, सुन्दरता, अपना ज्ञान कम लगता है। वह दुसरे के वास्तु, रूप, धन, ज्ञान से जलता है। इसलिए सबकी अपनी अपनी समस्याएं है। इस उपन्यास में समाज में व्याप्त स्त्री-पुरुष पुरुष संबंध को गंभीरता से उठाया गया है। *'पिघले चहरे'* 1984 में हुए सिक्ख दंगे पर आधारित है। उपन्यास कानपुर की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है जहाँ इस दंगे का प्रभाव दिल्ली के बाद सबसे ज्यादा था। लेखक ने इस उपन्यास में दंगे का समाजशास्त्र और धार्मिक ध्रुवीकरण की राजनीति को ईमानदारी के साथ चित्रित किया है। यह प्रमाणित किया है कि भारत भले ही एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है पर यहाँ का बहुसंख्यक अपने निजी लाभ के लिए आज भी धार्मिक पूर्वाग्रहों को अपने छाती से चिपकाए है। *'न हन्यते'* सुभाषचन्द्र बोस के जीवन पर आधारित एक आख्यानात्मक उपन्यास है। इसमें सुभाषचन्द्र बोस के जीवन संघर्ष को ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय संदर्भो के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। सच्चिदानंद चतुर्वेदी की कहानी संग्रह *'रोशनी की लकीरें'* में कुल नौ कहानी संकलित हैं। *रोशनी की लकीरें, झुनझुना, पाट, एक बटा दो, नेम-प्लेट, हरा पर्दा, जलियाँ वाली, थाह, खूंटा बदल गया* । इन कहानियों में लेखक ने बदलते सामाजिक सन्दर्भ में स्त्री-पुरुष संबंध, न्यूक्लियर फॅमिली में सिमटते पारिवारिक पारिवारिक संरचना में बच्चे और बुजुर्ग की स्थिति, ग्रामीण और कस्बाई इलेके में बदल रहे सामाजिक सन्दर्भ में रिश्तों की टूटती मर्यादाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। इन उपन्यासों और कहानियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण इन रचनाओं के सामाजिक सन्दर्भ को पाठकों तक संप्रेषित संप्रेषित करने में सहायक होगा। प्रस्तावित शोध का विषय हिंदी के पाठकों को सिक्ख दंगे से

13.04.2024

Dr Krishna Kumar Paswan
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhaul

कविता कुमारी
13.04.24

लेकर कन्नौज की संस्कृति विरासत और सामाजिक संरचना को समझाने के लिए उपयोगी और महत्वपूर्ण है।

<u>प्रस्तावित विषय पर पूर्व में किए गए शोध</u>

मेरी दृष्टि में सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन विषय पर अब तक कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। लेखक के समग्र साहित्य लेखन पर यह पहला शोध कार्य होगा। इसके पूर्व दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के हैदराबाद केंद से लेखक के प्रथम उपन्यास *अधबुनी रस्सी : एक परिकथा* पर लघुशोध प्रबंध लिखे गए हैं तथा डॉं संदीप राणभिरकर के निर्देशन में पिघले चहरे : मानवीय मूल्य और जीवन यथार्थ विषय पर राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों द्वारा परियोजना कार्य किया गया है। इसके अतिरिक्त सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कथा साहित्य पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। अतः मेरे द्वारा □सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन□ लेखक के साहित्य पर प्रथम मौलिक शोध किया जायेगा।

शोध के आधार ग्रन्थ का श्रोत

प्रस्तावित शोध विषय के आधार ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-

1. अधबुनी रस्सी : एक परिकथा - सच्चिदानंद चतुर्वेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
2. मझधार - सच्चिदानंद चतुर्वेदी, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2017
3. पिघले चहरे - सच्चिदानंद चतुर्वेदी, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2018
4. न हन्यते - सच्चिदानंद चतुर्वेदी, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, दिल्ली, 2022
5. रोशनी की लकीरें - सच्चिदानंद चतुर्वेदी, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2019

<u>शोध की परिकल्पना</u>

सर्वविदित है कि साहित्य समाज का दर्पण है। अतः साहित्य में समाज के विविध पहलुओं का ही चित्रांकन किया जाता है। समाज की सांस्कृतिक अस्मिता खान-पान, पहनावा-

13.04.2024

Dr Krishna Kumar Paswa
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhau

कविता कुमारी
13.04.24

ओढावा, बोली-बानी, पर्व-त्यौहार, रीति-रिवाज आदि के माध्यम से रचनाकार अपनी कृतियों में बार-बार इन्हीं सांस्कृतिक तत्वों की पुनर्व्याख्यायित करता है। सामाजिक क्रियाकलापों का अनुशीलन समाजशास्त्र के विविध सिद्धांतों के आधार पर किया जाता है जिसमें समाज के क्रियाकलापों का सूक्षम अन्वेषण होता है। अतः साहित्य और समाजशास्त्र दोनों के केंद्र में समाज है। इसलिए साहित्य का समाजशास्त्रीय विश्लेषण इसके अध्ययन के प्रमुख उपकरण हो सकता है। है। चूँकि सच्चिदानंद चतुर्वेदी ने कन्नौज के समाज को अपने लेखन में प्रमुखता से उभरा है जो हिंदी साहित्य में बहुत दुर्लभ है। इसलिए मेरा मानना है कि इनके कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन इन रचनाओं के सामाजिक सन्दर्भों को एक नई दृष्टि देगी। प्रस्तुत शोध सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कथा साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक परिवेश को नए सन्दर्भों में सरलीकृत कर समझने में मदद करेगा।

शोध प्राविधि

प्रस्तावित शोध में साहित्यिक कृतियों का अध्ययन विश्लेषण समाजशास्त्र के मानकों के आधार पर किया जायेगा। साहित्य और समाजशास्त्र दोनों स्वतंत्र अनुशासन हैं। चूँकि प्रस्तुत शोध में समाजशास्त्र के मानकों की सहायता से साहित्य का विश्लेषण किया जा रहा है इसलिए इस शोध कार्य में अंतर अनुशासनिक शोध प्राविधि का प्रयोग किया जायेगा। शोध में मूल रूप से सच्चिदानंद चतुर्वेदी के उपन्यासों एवं कहानियों का अध्ययन किया जायेगा। इसलिए पाठ-विश्लेषण प्राविधि का भी प्रयोग किया जायेगा। लेखक ने जिस भौगोलिक प्रदेश का चित्रण किया है उसकी प्रमाणिकता के लिए तथा भाषाई विशिष्टता की स्पष्टता के लिए सर्वेक्षण विधि का भी प्रयोग किया जायेगा।

13.04.2024

Dr Krishna Kumar Paswan
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhaul

कबिता कुमारी
13.04.24

प्रस्तुत शोध प्रारूप का अध्यायीकरण

प्रस्तुत शोध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर शोध प्रबंध के लेखन का कार्य किया जायेगा-

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय : सच्चिदानंद चतुर्वेदी और इनका रचना संसार

द्वितीय अध्याय : साहित्य के समाजशास्त्र की अवधारण

तृतीय अध्याय : सच्चिदानंद चतुर्वेदी के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

चतुर्थ अध्याय : सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

पंचम अध्याय : सच्चिदानंद चतुर्वेदी के कथा साहित्य की भाषिक संरचना और शिल्प

निष्कर्ष

आधार ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

13.04.2024

Dr Krishna Kumar Paswan
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhaul

कविता कुमारी
13.04.24

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, मैनेजर पांडेय, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला हरियाणा!

2. साहित्य का समाजशास्त्र, डॉ नगेंद्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस'नई दिल्ली।

3. समाजशास्त्र को स हरि कृष्ण रावत, पब्लिकेशन जयपुर

4. साहित्य सिद्धांत ऑस्टिन वारेन एवं रैनेवेलेक लोक भारती प्रकाशन 'इलाहाबाद।

5. आलोचना का समाजशास्त्र मुद्राराक्षस नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

6. समाजशास्त्र का परिचय, आनंद कुमार, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।

7. Sociology of literature And Drama, (Ed) Elizabeth □nd Tomorrow Burns, penguin books England.

8. साहित्य और समाज, विजय दान देथा, वाणी प्रकाशन

9. समाजशास्त्र अवधारणाएं एवं सिद्धांत, जेपी सिंह

10. मुख्य समाजशास्त्रीय विचारक एक समीक्षा डॉ० विजय लक्ष्मी सक्सेना, अटलांटिक पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।

11. Notes to literature T.W. Adorno (translation) Columbia University press New York.

12. Literature, popular culture and society, Leo Lowenthal , Pacific book publication California.

13. Literature and the image of the man,Leo Lowenthal, The Bacon Press, Boston.

13.04.2024

Dr Krishna Kumar
Assistant Professor
Dept. of Hindi
RCS College Manjhau

कविता कुमारी
13.04.24